छत्तीसगढ़ का राज नृत्य 'करमा'

ऋचा ठाकुर

लोक नृत्य प्रकृति की अनूठी देन है। प्रकृति दर्शन का दूसरा नाम ही लोक नृत्य है। आदिम काल से ही मानव ने प्रकृति की अनेक मनोहारी कलाओं जैसे हवा के झोकों से डालियों का हिलना, बिजली की चमक, वर्षा की बूँदों की टप-टप ध्वनि, चिड़ियों की चहचहाहट, भौंरों का गुँजन, कोयल की कुहुक, मोर और कबूतर की थिरकन, हिरण चौकड़ी जैसी अनेक नृत्यात्मक क्रियाशीलता से प्रेरणा लेकर उन्हें सुख और मनोरंजक अनुभूति से उजागर करना सीखा। यही कालांतर में लोक नृत्यों के रूप में मानव लोक-जीवन का अटूट हिस्सा बन गये।

लोक नृत्यों की उर्वरा भूमि ग्राम्य-परिवेश है। कृत्रिम शिष्टता और बनावटी मुखौटों से परे यह आत्मीयता का परिचायक है। वह साधन है उमंग का, हंसी-ठिठोली का, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का संपोषक भी है। आदिकाल से ही वन उपत्यकाओं में निवास करते रहने और कृषि पर निर्भर रहने के कारण इनमें आपसी सहयोग के भाव, संस्कार घुल-मिल गये हैं और वे इनकी लोक-संस्कृति में स्पष्ट दिखते हैं।

छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति भी अपनी अलौकिकता के कारण प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ के लोक नृत्यों की प्राकृतिक सादगीपूर्ण सज्जा ही उनकी आत्मा है। इन लोक नृत्यों में गूढ़ नियमों का कोई बंधन नहीं है, जो भी थोड़े नियम हैं वे सीधे-सरल और जनमानस की समझ के अनुरूप हैं। नृत्यों की लय में खेल, नाटक, पूजा, उपासना एवं युद्ध सब एकाकार हो जाते हैं। यहाँ के लोक नृत्यों की कलात्मकता अनूठी है। नृत्यों के गतिमान होते ही नर्तकों की टोली अपने-आप बनने लगती है। ये नृत्य विवाह, त्यौहार, उत्सव, मृत्यु, फसल कटाई आदि अवसरों पर अपनी छटा बिखेरते हैं। छत्तीसगढ़ के लोक नृत्यों को इन आधारों पर तीन प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है–

1. आनुष्ठानिक लोक नृत्य
2. पर्व एवं तीज-त्यौहार संबंधी लोक नृत्य
3. व्यावहारिक लोक नृत्य

छत्तीसगढ़ में प्रमुख तौर पर किये जाने वाले नृत्य हैं–परब नृत्य, गवर नृत्य, काकसार नृत्य, करमा नृत्य, पंथी नृत्य, सरहुल नृत्य, रीलो नृत्य, छेरका नृत्य, भूसल नृत्य, सुवा नृत्य, हिरकी नृत्य, राऊत या गहिरा नृत्य।

इन्हीं लोक नृत्यों में प्रमुख लोक नृत्य है-करमा नृत्य। जो छत्तीसगढ़ का राज्य नृत्य भी है। करमा नृत्य छत्तीसगढ़ अंचल के आदिवासी समाज का प्रचलित लोक नृत्य है।

भादों मास की एकादशी की उपवास के बाद करमा नृत्य में करम वृक्ष (Haldina cordifolia; adinacordifolia—जो कि रूबिएसी फैमिली का वृक्ष है, इसका पेड़ 20 मी. से भी ऊँचा हो सकता है। इसका तना और इसकी छाल एंटीसेप्टिक गुणों से भरपूर होती है। पत्तियाँ लगभग वृत्ताकार होती हैं।) की टहनियों को लेकर नृत्य होता है। इसकी शाखा को घर के आँगन या चौगान में लगाया जाता है। दूसरे दिन कुल देवता को नये अन्न का भोग चढ़ाया जाता है। नयी फसल आने की खुशी में यह किया जाता है। छत्तीसगढ़ के साथ ही भारत की कई जनजातियों में करमा नृत्य परंपरा देखने को मिलती है। मध्यप्रदेश, झारखण्ड में भी यह प्रमुख त्यौहार नृत्य है। छत्तीसगढ़ में बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, नारायणपुर, बीजापुर, बिलासपुर, रायगढ़ जिले के गोंड, उराँव, कमार कवर, पंडो, बिंझवार, बिरहोर आदि जनजातियों द्वारा करमा नृत्य किया जाता है।

करमा नृत्य की पाँच शैलियाँ प्रचलित हैं–

1. झूमर–इसमें झूम-झूम कर नृत्य किया जाता है।
2. लँगड़ा–एक पैर झुकाकर किये जाने वाला नृत्य लँगड़ा नृत्य है।
3. लहकी–लहराते हुए किये जाने वाला नृत्य लहकी नृत्य कहलाता है।
4. ठाढ़ा–खड़े होकर किये जाने वाला नृत्य ठाढ़ा कहलाता है।
5. खेमटा-आगे-पीछे पैर रखकर, कमर लचकाते हुये नृत्य करना खेमटा नृत्य होता है।

करमा नृत्य के विभिन्न प्रकार हैं–बिलासपुरी करमा, रास करमा, बैगानी करमा, देवार करमा, करम जितिया करमा, खलही करमा, भरियान करमा, कोरबा करमा।

बिलासपुरी करमा

यह बिलासपुर जिले में रहने वाली 'भुंईहार' जाति का नृत्य है। इसमें नर्तक पहले खड़े होकर गीत गाते हैं, फिर नृत्य करते हैं। कटोघोरा, पसान एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों में यह प्रचलित है। इसे भुंईहारी (भूमिया) करमा भी कहा जाता है। यह नृत्य पंक्ति या अर्धघेरे में होता है। करम वृक्ष की डाली काटकर, पूजा स्थल में उसे मड़ाया जाता है। इसके पास नृत्य करते हैं। फिर प्रातःकाल विधि-विधान के साथ इसका विसर्जन किया जाता है।

इस नृत्य में मुख्य वाद्य मांदर है। हाथों में रूमाल बांधकर छोटे-छोट दर्पण रखकर नृत्य होता है।

रास करमा

यह मुख्यतः 'कँवर' जनजाति के लोगों में केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। मांदर के साथ-साथ इसमें बड़े-बड़े मंजीरे का भी उपयोग होता है, जिसे रास कहते हैं। इन्हीं मंजीरों के कारण यह रास करमा कहलाता है।

बैगानी करमा

इसमें स्त्री और पुरुष दोनों ही परंपरागत शैली में गाते हुए नृत्य करते हैं। 'बैगा' जनजाति के पुरुष मिट्टी के बने मांदर और स्त्रियाँ ठिस्की, चटकोला लेकर नृत्य करते हैं। स्त्रियाँ सिर पर लंबी-लंबी घास की बनी 'बीरन' बाँधती है और पुरुष सिर पर मोरपंख की कलगी लगाये रहते हैं। इनके पैर धरती पर सरकते हुए प्रतीत होते हैं।

देवार करमा

'गोंड' जनजाति की उपजाति देवार मानी जाती है। यह घुमन्तू प्रजाति है। यह जाति वैशाख मास में करमा त्यौहार मनाती है। इनकी मान्यता है कि करम-सैनिक द्वारा भगवान को दिये गये कर्मसंबंधी वचन के पालन में यह आयोजित होता है। देवार करमा एकल या युगल दोनों स्वरूपों में होता है। इसमें युवती की भूमिका प्रमुख होती है, जो फिरकनी लगाते हुए, गीत गाते हुए नृत्य करती है। पैर और हाथ दोनों की मुद्राएँ विशेष होती है। कहीं-कहीं युवतियाँ एक से अधिक भी होती है। इनका साथ बीच-बीच में युवक भी देते हैं। करमा गीत हास्य और श्रृंगार परक होते हैं। इनमें अक्खड़ता और अतहड़ता दोनों ही दिखते हैं। मांदर केकड़ी, सारंगी इसमें मुख्य वाद्य है। वेश-भूषा छत्तीसगढ़ की मूल होती है, किंतु गोदना इनका प्रिय शृंगार है। देवार स्त्रियाँ स्वयं गोदना गोदने का काम करती है और अपने शरीर के प्रायः प्रत्येक अंग में विभिन्न नामों से गुदवाती भी हैं।

करम जितिया करमा

रायगढ़ जिले की आदिम जाति 'उराँव' का विशिष्ट नृत्य है–करम-जितिया करमा। यह 'क्वांर' भी लिख सकते हैं के महीने में किया जाता है। यह एक प्रकार से इनका वार्षिक उत्सव है, जिसमें सभी आयु के लोग भाग लेते हैं। सुविधानुसार इसका पर्व-काल बदलता भी है, जब किसी की मनौती पूरी होती है तब भी यह किया जाता है। करमा-पूजा स्थल पर करम-वृक्ष की टहनी गाड़ी जाती है। इसमें बड़ादेव शंकर का निवास माना जाता है। अविवाहित लड़कियाँ व्रत रखती हैं। परिवार का मुखिया चढ़ौती की सामग्री रखता है। पूजा के पश्चात् मांदर की थाप के साथ करम-जितिया होता है। सब मिलकर नृत्य करते हैं। रात्रिभर नृत्य के पश्चात् प्रातःकाल करम की टहनी को उराँव रीति से जलाशय में विसर्जित कर दिया जाता है। व्रत-धारी लड़कियाँ स्नान के बाद व्रत तोड़ती हैं।

करमजितिया के प्रमुख चार भाग–करम जितिया, करम चलि, करम तारना और चाली फिरना होते हैं। वेश-भूषा में मुख्य रूप से रंगीन बुनकरी साड़ी, धोती पहनी जाती है। आभूषणों में बिड़ीयों, कनौसी, खुखरी पजरी, दुलना, आदि पहने जाते हैं। वाद्यों में मांदर के साथ ही नंगाड़ा, बाँसा चटकुला, झांझ बजाये जाते हैं।

माड़ी करमा

दंतेवाड़ा की 'दंड़ामी माड़िया' जनजाति माड़ी करमा नृत्य करती है। जब भी कोई सामाजिक शुभ कार्य के समय प्रमुख लोक नृत्यों का आयोजन होता है तब बीच-बीच में विश्राम के क्षणों में माड़ी करमा होता है,

जिसे केवल महिलाएँ करती हैं। यह बिना वाद्य के गीतों के साथ चलता है। इन गीतों को पाटा कहते हैं। इस नृत्य में महिलाएँ पंक्तिबद्ध खड़ी होती हैं और गीत के उतार-चढ़ाव के अनुसार आगे बढ़ती हैं और पीछे हटती हैं।

वेश-भूषा में स्त्रियाँ पारंपरिक साड़ी लपेटकर और पुरुष लंगोट पहनते हैं, किंतु इसकी असली सुन्दरता इनके आभूषण होते हैं। प्रत्येक युवती के शरीर में 15 किलो और युवक के शरीर में 30 किलो के आभूषण होते हैं। वाद्य के रूप में तुरही, ढोल, मोटी बाँसुरी, ढड़का वाद्य बजाये जाते हैं।

खलही करमा

बिलासपुर, डिंडौरी-पेंड्रा गौरेला के संगम के भू-भाग के टुकड़े को खलही (खलौटी या खल्हा) कहा जाता है। खल्हे का अर्थ है नीचे या निचली वाली भौगोलिक स्थिति। यही कारण है कि ऐसा नाम प्रचलित हुआ है। इस क्षेत्र में प्रचलित नृत्य में कुछ अंतर हैं। इसमें महिलाएँ, पुरुषों से आगे बढ़ते हुए तीव्र गति से चक्कर मारती हैं एवं एक-दूसरे के आमने-सामने होकर आगे-पीछे जाते हैं। पैरों को छाती तक ऊपर उठाकर नीचे लाते हैं। अलट-पलट नाचना इसकी विशेषता है। इसकी वेश-भूषा में तीनों जिलों का प्रभाव दिखता है। वाद्य के रूप में मांदर टिमकी, ठिस्की, मंजीर बजाये जाते हैं।

भरियान करमा

'भारिया जाति' के विशेष नृत्य में भरियान करमा होता है। मूलतः यह जाति शहडोल जिले की है। भरियान करमा में स्त्री-पुरुष अलग-अलग टोली बनाकर आमने-सामने पंक्तिबद्ध होकर नाचते हैं। खल्ही करमा जैसी ही इसमें वाद्य और वेश-भूषा दिखती है।

कोरवा करमा

सरगुजा जिले की 'कोरबा जनजाति' का करमा नृत्य कोरवा करमा कहलाता है। यह विशेष रूप से जंगलों में रहना पसंद करते हैं। इनका नृत्य अन्य करमा-नृत्य प्रकारों से भिन्न होता है। वे विशिष्ट अवसर की प्रतीक्षा नहीं करते। किसी भी समय आपसी परामर्श से यह आयोजन हो जाता है। स्त्रियाँ सफेद साड़ी पहनकर अर्धचन्द्राकार घेरे में पैरों को मिलाते हुए सरकते हुए नृत्य करती हैं। पुरुष उनके सामने मांदर, झांझ बजाते चलते हैं।

देश के हर राज्य और क्षेत्र की खास परंपराएं होती है। छत्तीसगढ़ का करमा नृत्य गोंडवाना की लोक-संस्कृति की पहचान है। "कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी" की कहावत के साथ ही यह हमारी संस्कृति की अमिट धरोहर है। क्षणिक बदलाव पारिस्थितिक होते हैं, किंतु मूल सबका एक ही है। "उस अज्ञात शक्ति की अराधना", जो सबके जीवन और कर्म का लेखा-जोखा रखती है।

संदर्भ

1. भारत के लोक नृत्य-प्रो. शरीफ मोहम्मद
2. छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य-डॉ. सत्यभामा आड़िल
3. करमा नृत्य-भारतकोश

ऋचा ठाकुर,

प्राध्यापक, नृत्य शासकीय, डॉ. वा.वा.पा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

दुर्ग (छत्तीसगढ़)